अमेरिकी क्रांति : कारण, स्वरूप, परिणाम

अमेरिकी क्रांति मातृराज्य इंग्लैंड एवं अमेरिकी उपनिवेशों के बीच मौलिक मतभेदों के कारण हुई जिसने अमेरिका सहित पूरे विश्व को गहरे प्रभावित किया। यह प्रबुद्धवाद की पहली प्रायोगिक परीक्षण था जिसके मूल में "आर्थिक निरंकुशतावाद" था। यह संघर्ष न तो गरीबी के कारण उत्पन्न असंतोष का परिणाम था न ही यहाँ के लोग सामंती व्यवस्था से पीड़ित थे वरन् अमेरिकी उपनिवेशों ने अपनी स्वच्छंदता, व्यवहार में स्वतंत्रता तथा अपनी स्वायत्तता को बनाये रखने के लिए विद्रोह किया जिसके वे अभ्यस्त हो गये थे।

अमेरिकी उपनिवेशों की अप्रसन्नता का मुख्य कारण था- आर्थिक मामलों में ब्रिटेन की औपनिवेशिक नीति। इंग्लैंड की नीतियों ने अमेरिकी उपनिवेश को अपनी स्वयं की अर्थव्यवस्था विकसित करने को प्रोत्साहित नहीं किया। ब्रिटेन की संसद ने जहाजरानी अधिनियम द्वारा इन उपनिवेशों को गैर-ब्रिटिश जहाजों को काम में लाने की मनाही कर दी थी। कुछ व्यापार संबंधी कानूनों द्वारा इन उपनिवेशों की कुछ वस्तुओं जैसे तम्बाकू, कपास, चीनी, रुई, और नील के निर्यात केवल ब्रिटेन को ही किया जा सकता था। विदेशी व्यापार कानून द्वारा यह प्रावधान किया गया कि अमेरिका से आयात-निर्यात होनेवाली हर वस्तु पहले किसी अंग्रेज बंदरगाह पर जायेगी और बाद में कहीं और जायेगी। एक अमेरिकी उपनिवेश से दूसरे उपनिवेश को जानेवाली सामग्री भी विदेशी व्यापार माना गया और उसपर भारी सीमा शुल्क लगाया गया। उपनिवेशों को लोहा एवं ऊनी कपड़े जैसे उद्योगों को आरम्भ करने की मनाही थी। उन्हें इन वस्तुओं का आयात केवल ब्रिटेन से ही करने को मजबूर किया जाता था। इसप्रकार हर तरफ से उपनिवेशों के उद्योग और विकास में रोड़े अटकाये जा रहे थे। अंग्रेजों ने उपनिवेशवासियों को पश्चिम की ओर नये प्रदेश में बढ़ने पर प्रतिबंध लगाकर भी असंतुष्ट कर दिया था।

सप्तवर्षीय युद्ध के बाद कनाडा पर इंग्लैंड का अधिकार हो गया था जो पहले फ्रांस के अधीन था, अतः उत्तरी भाग से फ्रांसीसी खतरा टल गया और इसप्रकार जो एकमात्र अंकुश अमेरिकियों पर थी वह भी समाप्त हो गया। इस युद्ध के दौरान उपनिवेशों को अपनी सैन्य ताकत का भी एहसास हुआ क्योंकि उन्होंने भी इस युद्ध में भाग लिया था। इस प्रकार यह युद्ध उपनिवेशवादियों के आत्म-सम्मान एवं अनुभव को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ।

इंग्लैंड के लगातार विश्वव्यापी युद्धों में फँसे रहने के कारण अर्थव्यवस्था लड़खड़ा रही थी और उसे धन की आवश्यकता थी। इसी सिलसिले में 1765 में ब्रिटेन की संसद ने "स्टाम्प एक्ट" पारित किया। इसके अन्तर्गत उपनिवेशवादियों को सभी व्यापारिक सौदों पर कर देना पड़ता था। कानूनी कागजातों और अन्य दस्तावेजों पर 20 शीलिंग तक स्टाम्प लगाना पड़ता था। इस कानून से उपनिवेशों में जबरदस्त विरोध की भावना जाग उठी और उपनिवेशवादियों ने ब्रिटेन से आनेवाली सभी वस्तुओं का बहिष्कार करने का निश्चय किया। अनेक शहरों में विद्रोह हुये और अनेक कर इकट्ठा करनेवाले अधिकारियों की हत्या कर दी गई। उपनिवेशवादियों का कहना था कि ब्रिटिश संसद में उनका कोई प्रतिनिधि नहीं है इसलिए उसे उनपर कर लगाने का कोई अधिकार नहीं है। उनका यह भी कहना था कि इन करों से प्राप्त राजस्व उपनिवेशों के हित में व्यय नहीं किया जाता। वह तो ब्रिटिश साम्राज्यों के हित में खर्च किया जाता है।

अमेरिकी क्रांतिकारियों को 17वीं सदी के इंग्लैंड के दार्शनिकों के विचारों से बहुत प्रेरणा मिली। लॉक हॉब्स, मिल्टन आदि दार्शनिकों का मत था कि मनुष्य के कुछ मौलिक अधिकार हैं जिसकी अवहेलना करने का अधिकार किसी भी सरकार को नहीं है। थॉमस जैफरसन ने उपनिवेशवादियों के विद्रोह करने के अधिकार का समर्थन किया और अमेरिकी कवि 'थॉमस पेन' ने जोरदार शब्दों में अमेरिकी निवासियों की स्वतंत्रता की माँग का समर्थन किया। 'कॉमन सेंस' में उन्होंने लिखा — ... ऐसा समझना कि कोई

Scanned with CamScanner

द्वीप सदा ही एक महाद्वीप पर शासन करता रहेगा बिल्कुल असंगत है।" इंग्लैंड के प्रमुख विचारक एडमंड बर्क ने संसद में अमेरिका के साथ सौतेला व्यवहार के प्रति रोष प्रकट किया।

सब उपनिवेशों की एक सी समस्याओं पर विचार करने हेतु मैसाचुसेट्स उपनिवेश के नेताओं ने अन्य उपनिवेशों से उनके प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया। वे सब इस बात पर सहमत हुये और उन्होंने इस बात की घोषणा की कि ब्रिटेन की संसद को ऊपर कर लगाने का अधिकार नहीं है। उन्होंने यह नारा बुलंद किया - प्रतिनिधित्व के बिना कोई कर नहीं।" उन्होंने ब्रिटेन के वस्तुओं के आयात रोकने की धमकी दी। इस धमकी के कारण ब्रिटेन ने स्टाम्प एक्ट को रद्द कर दिया किंतु संसद अब भी इस बात पर अड़ी रही कि उसे कर लगाने का अधिकार है। यह बात दिखलाने के लिए चाय पर ये कर नहीं हटाया गया। इससे झगड़ा बढ़ गया। सन् 1773 में कुछ उपनिवेशों ने इंग्लैंड की जहाजों में आनेवाली चाय को उतारने से इंकार कर दिया। बोस्टन में जब वहाँ के गवर्नर ने चाय को उतारने का आदेश दिया तो वहाँ के कुछ नागरिक "मोहॉक" के नेतृत्व में अमेरिकी आदिवासियों जैसे कपड़े पहने उस जहाज पर पहुँचे जिसमें चाय आती थी और उन्होंने चाय की सभी पेटियाँ समुद्र में डाल दी। यह घटना "बोस्टन टी पार्टी" के नाम से जाना जाता है। इसके पश्चात सरकार ने कठोर दमनकारी नीति अपनाई। सरकार के दमनकारी कार्यों के कारण लोगों का आक्रोश उबल पड़ा। 5 सितम्बर 1774 को फिलाडेल्फिया में उपनिवेशों की प्रतिनिधियों की पहली कांग्रेस बैठक हुई। इसमें Declaration of Rights की घोषणा की गई। द्वितीय महाद्वीपीय सम्मेलन 4 जुलाई 1776 को हुआ जिसमें Declaration of Independence को स्वीकार किया गया। जार्ज वाशिंगटन को अमेरिकी उपनिवेश का सेनापति नियुक्त किया गया एवं स्वतंत्र राष्ट्र के लिए संग्राम आरम्भ हो गया।

फ्रांस की सरकार ने खेत, खाद्य सामग्री और धन

भेजकर उपनिवेशों की सहायता की। ब्रिटेन की अन्य शत्रुओं स्पेन एवं हालैंड ने भी अन्यत्र ब्रिटेन के विरुद्ध शीघ्र युद्ध छेड़ दिया। इसी बीच ब्रिटेन में भी गड़बड़ी शुरु हो गयी थी। आयरलैंड में विद्रोह का डर था। संसद में प्रभावशाली नेता उपनिवेशवादियों के विरुद्ध हो रहे युद्ध का विरोध कर रहे थे। इंग्लैंड की युद्ध नीति तय करनेवालों ने अमेरिकी शक्ति का ठीक अनुमान नहीं लगाया और सामरिक नीति का निर्माण करते समय महत्वपूर्ण भौगोलिक कठिनाइयों पर ध्यान नहीं दिया। भौगोलिक दूरी के कारण भी अंग्रेजों की मुश्किलें बढ़ीं। वाशिंगटन का योग्य नेतृत्व और अमेरिकियों द्वारा छापामार युद्ध पद्धति अपनाया जाना भी अंग्रेजों के लिए महंगा सिद्ध हुआ। जार्ज की अलोकप्रियता एवं अधिकारियों की अयोग्यता ने उपनिवेशवादियों के लिए विजय सरल कर दी। अंततः 1781 में ब्रिटेन के सेनापति लार्ड कार्नवालिस ने आत्मसमर्पण कर दिया। दो वर्ष बाद 1783 में पेरिस की संधि पर हस्ताक्षर हुए। ब्रिटेन ने अपने 13 भूतपूर्व उपनिवेशों की स्वतंत्रता स्वीकार कर ली।

स्वरूप: अमेरिकी क्रांति का स्वरूप मुख्यतः मध्यमवर्गीय था। अमेरिका के मध्यमवर्गीय लोग, अत्यंत उदार एवं प्रगतिशील थे। यह वर्ग सामाजिक समानता की माँग करता था और अपने राजनीतिक अधिकारों को मान्य बनाना चाहता था। इस वर्ग में निराशा और असंतोष की भावना थी जिसे वह संघर्ष करके मिटाना चाहता था। इसका अर्थ यह नहीं है कि सर्वसाधारण ने संग्राम की उपेक्षा की किंतु संग्राम का पथप्रदर्शक मध्यमवर्ग ने ही किया। इसका स्पष्ट प्रमाण यह है कि स्वतंत्रता के घोषणापत्र पर जितने लोग हस्ताक्षर किये थे उनमें अधिकांश लोग मध्यमवर्गीय थे। संविधानपरिषद् में मध्यमवर्गीय लोगों का बोलबाला था। जो संविधान बना उसके अनुसार पूर्ण जनतंत्र राज्य कायम नहीं हुआ। जनसाधारण को मताधिकार से वंचित रखा गया। स्त्रियों, नीग्रो तथा बहुत से रैय्यतों को मताधिकार नहीं मिला। कुछ खास धार्मिक मान्यताओं के कारण कैथोलिक और कुछ खास तरह के प्रोटेस्टेंट भी मताधिकार से वंचित थे।

अमेरिका के समस्त उपनिवेशवादी विद्रोही नहीं थे। उपनिवेश-वादियों का एक बहुत बड़ा समूह राजभक्त कहा जाता था, राजा के प्रति निष्ठावान रहा। स्वतंत्रता की घोषणा से इन्हें निराशा हुई। कुलीन अंग्रेजों ने अमेरिका में भूमि खरीद ली थी और वे किसानों से लगान वसूल करते थे। वे उपनिवेशवादियों को अपने काश्तकारों के रूप में रखना चाहते थे।

अमेरिकी क्रांति एक नहीं अपितु दो क्रांतियों का सम्मिलन था। प्रथम बाह्य क्रांति थी जिसके अन्तर्गत उपनिवेशों ने ब्रिटेन के विरुद्ध विद्रोह किया तथा जिसका कारण उपनिवेशों व ब्रिटेन के मध्य आर्थिक हितों का संघर्ष था। द्वितीय आंतरिक क्रांति थी जिसका प्रयोजन स्वतंत्रता के पश्चात् अमेरिकी संविधान की रूपरेखा तैयार करना था।

परिणामः अमेरिकी क्रांति ने साम्राज्यवाद को प्रथम शिकस्त दी। ब्रिटेन अपने सबसे धनी आबादीवाला देश खो दिया और महानता की संभावनाओंवाला एक स्वतंत्र देश का अभ्युदय हुआ। क्रांति पश्चात् अमेरिका में गणतंत्रवाद, संघवाद और संविधानवाद की नींव पड़ी।

अमेरिकी क्रांति एक तरह से वाणिज्यवादी प्रतिबंधों के विरुद्ध एक विद्रोह था इसीलिए उसने एडम स्मिथ के लैसेज फेयर सिद्धांत को बल प्रदान किया एवं वाणिज्यवादी विचारधारा पर गहरा आघात किया।

इसने विश्व के समक्ष प्रथम आदर्श उपस्थित किया कि राष्ट्रीय भावना के जागृत हो जाने पर उपनिवेशों को अधीन बनाये रखना असम्भव है। स्वतंत्रता की जो मशाल अमेरिका में जली उसके प्रकाश से पूरा विश्व आलोकित हुआ। पूरे यूरोप में उपनिवेशवादी विरोधी लहर चल पड़ी। फ्रांसीसी क्रांति का मूल सिद्धांत स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व का मूल अमेरिकी संघर्ष में ही निहित है। इसने नवीन युग का सूत्रपात किया।

Scanned with CamScanner